RNI:RAJHIN/2013/53539
Postal Regd. No. RJ/SRO/9662/2024-26
Licensed to Post without pre-payment
No. RJ/WR/WPP/18/2024-26

शिव आमंत्रण

सशक्तिकरण एवं सामाजिक सेवाओं का दर्पण

रक्षाबंधन विशेष 2025

वर्ष:12, अंक:8, हिन्दी (मासिक), अगस्त 2025, पृष्ठ 4

इस **रक्षाबंधन** पर करें एक नया संकल्प

महानता का आधार है पवित्रता

नकारात्मक विचारों और भावनाओं से खुद को बचाना सबसे जरूरी

जीवन का आधार हमारे विचार और भावनाएं होती हैं। विचार जितने शक्तिशाली, उच्च, श्रेष्ठ और महान होते हैं जीवन की क्वालिटी भी उतनी ही ऊंच होती है। सफल, असफल, महान और दिव्य आत्माओं में सिर्फ विचारों का ही अंतर होता है। चारों ओर नकारात्मकता, हीन भावना से भरे माहौल के बीच खुद को इन पर हावी नहीं होने देना, बुरे विचारों से स्वयं की रक्षा कर लेना अपने आप में बड़ी उपलब्धि और महानता है। क्योंकि जब हमारे विचार कमजोर, नकारात्मक और हीन भावना से भर जाते हैं तो मन भी कमजोर हो जाता है। ऐसी स्थिति में हमें जीवन में आने वाली छोटी-छोटी समस्याएं, परिस्थितियां भी पहाड़ समान लगने लगती हैं। यदि मन शक्तिशाली है तो पहाड़ जैसी समस्या रुई के समान लगती है। समस्याएं, परिस्थितियां और कुछ नहीं कमजोर मन की रचना हैं। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर हम सभी संकल्प करें कि अपने विचारों को सकारात्मकता से भरपूर रखेंगे, सदा श्रेष्ठ, शुभ और प्रेरणादायी विचार ही करेंगे। सदा स्वयं उमंग-उत्साह से भरपूर रहेंगे और दूसरों को भी उमंग-उत्साह दिलाएंगे। खुश रहेंगे और खुशियां बांटेंगे। सदा दुआ लेंगे और दुआ देंगे। इन बातों के समावेश से आपका जीवन खुशियों से गुलजार और सुख-शांति, आनंदमय बन जाएगा।

पवित्रता का बंधन बांधने परमधाम से आए परमात्मा

शिव आमंत्रण, आबू रोड।

रक्षाबंधन। भाई-बहन के परम पवित्र, अटूट स्नेह-प्यार का महापर्व। रेशम की डोर से बंधा यह प्यारा बंधन भाई-बहन के निश्छल प्रेम का प्रतीक है। दुनिया में भाई-बहन का रिश्ता सबसे पवित्र और अनोखा होता है। पवित्रता ही सुख-शांति की जननी है। यह पावन पर्व हमें संदेश देता है कि इंसान को सबसे ज्यादा अपने आपको व्यसन-विकारों, बुराइयों, नकारात्मक विचारों, भावनाओं से खुद की रक्षा करने की जरूरत है। आंतरिक मनोविकारों से जिसने अपनी रक्षा करना सीख लिया उसने जीवन का फलसफा सीख लिया। इंसान बाहरी ताकतों से तो लड़ लेता है लेकिन उसकी आंतरिक कमजोरी उसे शक्तिहीन बना देती है। इस दुनिया को दुख से निकालने और मनुष्यात्माओं का कल्याण करने के लिए पवित्रता के सागर, परमपिता परमात्मा इस धरा पर आकर दिव्य ज्ञान दे रहे हैं और सुख-शांति का रास्ता बता रहे हैं। रक्षाबंधन के आध्यात्मिक रहस्यों को उजागर करती, शिव आमंत्रण की स्पेशल स्टोरी...

हर बहन अपने भाई से लें एक संकल्प...

आइए, इस रक्षाबंधन को हम सभी नए और अनोखे तरीके से मनाएंगे। हर बहन अपने भाई को रक्षासूत्र बांधते समय संकल्प कराएं कि मेरे भैया! जैसे आप मुझे अपनी बहन की रीति से सदा पवित्र भाव, और विचार रखते हैं, मेरी लाज, सम्मान और इज्जत की रक्षा करते हैं, वैसे ही समाज की हर बेटी को अपनी बहन की तरह पवित्र दृष्टि से देखेंगे, उसके सम्मान और इज्जत की रक्षा करेंगे। जहां कहीं भी कोई बहन-बेटी समस्या में होगी तो हर संभव मदद करेंगे। यदि हर एक बहन अपने भाई से यह संकल्प कराए तो समाज में हर बहन-बेटी निडर होकर घर की चार दीवारी से बाहर निकल सकेगी। हम सभी के सामूहिक प्रयासों से परिवार, समाज, राष्ट्र और सारा विश्व एक आदर्श, सुंदर समाज बन जाएगा।

तिलक

भारतीय संस्कृति में शुभ कार्य के शुरु करने के पूर्व तिलक किया जाता है। तिलक शुभ, विजय और आत्म स्मृति का प्रतीक है। तिलक भृकुटी के बीच किया जाता है। शरीर को चलाने वाली चैतन्य शक्ति आत्मा, भृकुटी के मध्य विराजमान रहती है। वास्तव में तिलक आत्मा की ज्योति स्वरुप का प्रतीक है।

रक्षा सूत्र

किसी भी धार्मिक कार्य में ब्राह्मण, यजमान को मंत्रोच्चार के साथ रक्षासूत्र बांधते हैं। चूंकि ब्राह्मण (ब्रह्मचर्य व्रत के साथ सभी नियमों का पालन करता हो) पवित्र होते हैं इसलिए रक्षासूत्र बांधने के लिए वह योग्य हैं। इसी तरह भाई-बहन का रिश्ता भी दुनिया में सबसे पवित्र होता है, इसलिए बहनें, भाइयों की कलाई पर रक्षासूत्र बांधती हैं।

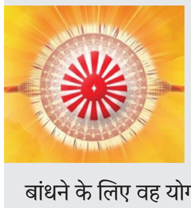

उपहार या भेंट

रक्षासूत्र बांधने पर भाई अपनी बहन को उपहार या भेंट में देते हैं, तो क्यों न इस बार रक्षाबंधन पर हर भाई अपनी बहन से संकल्प करे कि मेरी बहना आज से मैं तुम्हारी तरह हर एक बहन की लाज की रक्षा करुंगा। हर एक बहन-बेटी का मान रखूंगा। एक बहन के लिए भाई का दिया ये संकल्प और उपहार सबसे बड़ा उपहार है।

सबके प्रयासों से आएगा रामराज्य

हर किसी के मन में एक सपना रहता है कि हमारा घर-परिवार, समाज और राष्ट्र खुशहाल, संपन्न और समृद्ध हो। लेकिन रामराज्य का सपना किसी एक के प्रयास से साकार नहीं होगा, इसके लिए हम सभी को मिलकर सामूहिक प्रयास करना होंगे। हर एक भाई-बहन को सबसे पहले अपने मन, संकल्प, संस्कार और कर्मों में रामराज्य लाना होगा। जब हर एक की सोच और संस्कार राम जैसे हो जाएंगे तो यही दुनिया रामराज्य बन जाएगी। इस रक्षाबंधन हम संकल्प लेते हैं कि सबसे पहले अपने संकल्प और कर्मों में रामराज्य के समान दैवी संस्कारों का आह्वान करेंगे, उन्हें आत्मसात कर दूसरों के लिए प्रेरक और उदाहरणमूर्त बनेंगे। आपका हिम्मत का एक कदम अनेकों के जीवन के लिए प्रेरणामूर्त बन जाएगा। क्योंकि स्व परिवर्तन ही विश्व परिवर्तन का आधार है।

एक राखी वीर जवानों के नाम

शरहद पर हमारे देश के वीर जवान, सैनिक भाई हमारी रक्षा के लिए ठंड, गर्मी, बारिश के बीच दिन-रात मुस्तैद रहते हैं, ताकि हम अपने घरों में त्योहार खुशी के साथ मना सकें। घर-परिवार से दूर यह सैनिक भारत मां के लाल हम वतनवासियों के लिए जान भी कुर्बान कर देते हैं। ऐसे में इस रक्षा बंधन एक राखी वीर जवानों के नाम भी सरहद पर भेजकर हम उनकी प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर सकते हैं।

आखिर किसे रक्षा की जरूरत है...?

रक्षा बंधन तो हम सभी हर साल मनाते हैं लेकिन सही मायने में रक्षा की जरूरत किसे है? क्या बहन से कोसों दूर बैठा भाई आपात स्थिति में उसकी रक्षा कर सकता है? क्या भाई, हर पल अपनी बहन के साथ रह सकता है? सबसे बड़ा बल पवित्रता का बल होता है। पवित्रता की शक्ति से ही विश्व परिवर्तन और नवयुग का सृजन होता है। कुंवारी कन्या की हम दैवी का रूप मानकर पूजन करते हैं। शुभ कार्य में आगे करते हैं। नौ दुर्गा में कन्या पूजन का विशेष महत्व बताते हैं, लेकिन जब कन्या का विवाह हो जाता है तो वह सबके सामने शीश नवाने लगती है। विवाह के पूर्व तक कन्या को उसकी पवित्रता के कारण दैवी स्वरूप का दर्जा दिया जाता है। संत-महात्मा, ऋषि-मुनियों के सामने भी हम सभी उनकी पवित्रता के कारण ही आशीर्वाद लेते हैं। पवित्रता से जीवन महान और आचरण योग्य बन जाता है। परमात्मा का यही संदेश है कि यह नई सृष्टि के सृजन का संधिकाल चल रहा है मेरे बच्चों पवित्र बनो, योगी बनो।

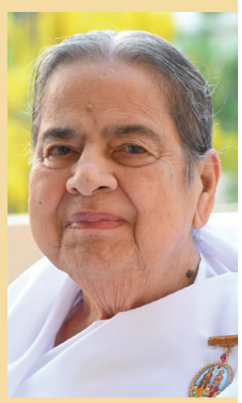

- राजयोगिनी मोहिनी दीदी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़

पवित्रता का परम पर्व

परमात्मा पांच तरह से करते हैं हमारी रक्षा, मनुष्यों को छुड़ाते हैं माया के बंधनों से...

शास्त्रों में उल्लेख है कि जब-जब इस सृष्टि पर घोर अंधकार-अज्ञान, पाप कर्म बढ़ जाते हैं, तब-तब नई दैवी सतयुगी सृष्टि की स्थापना और सृजन करने के लिए परमपिता परमात्मा युगे-युगे अवतरित होते हैं। वह पवित्रता के बल से मनुष्य को पतित से पावन बनाकर नई दुनिया के योग्य बनने की शिक्षा देते हैं। रक्षाबंधन इसी पवित्रता और नई शुरुआत का प्रतीक है। ये बंधन से अपनी पवित्रता की रक्षा करने का और नई दुनिया को सृजन का महापर्व है।

नई सृष्टि के सृजन का आधार है पवित्रता

1. इंद्रियों पर विजय प्राप्त करने का सूचक है यह पावन पर्व : यह त्योहार एक धार्मिक त्योहार है और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने के संकल्प का सूचक है अर्थात् भाई और बहन के नाते में जो मन, वचन और कर्म की पवित्रता समाई हुई है, उसका बोधक है। परमपिता शिव परमात्मा ने इस सृष्टि पर अवतरित होकर प्रजापिता ब्रह्मा के तन का आधार लेकर कन्याओं-माताओं को मन-वचन-कर्म की संपूर्ण पवित्रता का संकल्प कराया। संपूर्ण पवित्रता का व्रत धारण करने के कारण और परमात्मा की शिक्षाओं को जीवन में शिरोधार्य करने वाले ब्रह्मा वत्स ब्राह्मण कहलाए। उन्हें ब्राह्मण पद पर आसीन किया। साथ ही ज्ञान का कलश दिया और उन द्वारा भाई-बहन के सम्बन्ध की पवित्रता की स्थापना का कार्य किया। जिसके फलस्वरूप सतयुगी पवित्र सृष्टि की स्थापना हुई। उसी पुनीत कार्य की आज पुनरावृत्ति हो रही है। ब्रह्माकुमारी बहनें ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा ब्राह्मण पद पर आसीन होकर राखी बांधकर बहन-भाई के शुद्ध स्नेह और पवित्रता के शुद्ध संकल्प की रक्षा करती हैं।

2. ईश्वरीय बंधन में बंधने के बाद कुछ शेष नहीं रह जाता : मानव स्वभाव से ही स्वतंत्रता प्रेमी है। अतः मनुष्य जिस बात को बंधन समझता है, वह उससे छूटने का प्रयत्न करता है। परन्तु रक्षा बंधन को बहनें और भाई त्योहार अथवा उत्सव समझकर खुशी से मनाते हैं। यह एक न्यारा और प्यारा बंधन है। बंधन दो प्रकार के होते हैं एक है ईश्वरीय बंधन और दूसरे हैं सांसारिक अर्थात् कर्मों के बंधन। ईश्वरीय बंधन से मनुष्य को सुख मिलता है, परन्तु दूसरे प्रकार के बंधन से दुःख की प्राप्ति होती है। रक्षाबंधन ईश्वरीय बंधन, आध्यात्मिक बंधन अथवा धार्मिक है। विचारवान् मनुष्य ईश्वरीय बंधन में तो बंधना चाहते हैं परन्तु माया के बंधन से मुक्त होना चाहते हैं। जैसे आज आध्यात्मिकता और धर्म-कर्म क्षीण हो जाने से संसार की वस्तुओं से अब सत् अथवा सार निकल गया है, वैसे ही आध्यात्मिकता को निकाल देने से इस त्योहार से भी सत् अथवा सार निकल गया है। वरना यह त्योहार बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उच्च कोटि का त्योहार है।

3. सांसारिक आपदाओं अथवा संकटों से रक्षा : सदा के लिए दुःखों और संकटों से भी एक परमात्मा ही रक्षा कर सकते हैं। कोई भी मनुष्यात्मा यह कार्य नहीं कर सकती है। परमात्मा को ही संकटमोचन, दुःख भंजन और सुख दाता कहते हैं। परमात्मा ही काल और कंटक दूर करने वाले हैं। ्रकृति तो उनकी दासी है। मनुष्यों को माया के बंधन से भी परमात्मा ही छुड़ाते हैं, तभी तो मनुष्य परमपिता पुकार कर कहते हैं- विषय-विकार मिटाओ पाप हरो देवा। गज और ग्राह का जो प्रसंग प्रसिद्ध है, वह भी इसी रहस्य को स्पष्ट करता है कि जब ग्राह गज को निगलने ही वाला था तो भगवान् ने ऐसे समय उसकी रक्षा की। फूल तोड़कर अपनी सूंड ऊपर की तो भगवान ने यह देखकर कि वह पुष्प चढ़ा रहा है अर्थात् याद कर रहा है, उसकी रक्षा का संकल्प किया। वास्तव में आध्यात्मिक अर्थ में ज्ञानी मनुष्य ही गज हैं, माया ही एक ग्राह है, यह संसार एक सागर है और कमलरूपी पुष्प अलिप्त जीवन का सूचक है। अतः इसका भाव यह है कि माया के आघातों से भगवान ही ज्ञानवान मनुष्यों की रक्षा करते हैं। ज्ञान ही स्वदर्शन चक्र है, जिससे माया का गला कट जाता है और परमात्मा ही सभी के रक्षक हैं। इसी कारण गीता में यह वाक्य हैं कि साधुओं का भी परित्राण करने वाले परमात्मा ही हैं।

4. धर्म, पवित्रता, सतीत्व की रक्षा : दुष्टों से पवित्रता की रक्षा वास्तव में सर्व समर्थ परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं। इसलिए महाभारत का यह प्रसंग प्रसिद्ध है कि कौरवों की भरी सभा में जब द्रौपदी का चीर हरण होने लगा तो द्रौपदी ने भगवान को ही पुकारा था, क्योंकि तब कोई भी मित्र या सम्बन्धी उसकी रक्षा न कर सका था। इसलिए ऐसी आपदा के समय लोग भगवान् को ही सम्बोधित करके कहते हैं- हे प्रभु, हमारी लाज रखो, हमारे धर्म की रक्षा करो। निस्संदेह भगवान् ही हैं जो माताओं-बहनों के चीर बढ़ाते हैं अर्थात् उनके सतीत्व और धर्म की रक्षा करते हैं। इसी कारण दुःख के समय मनुष्य के मुख से ये शब्द निकलते हैं हे प्रभु, मुझे सहारा दो।

5. काल के पंजे से रक्षा : काल के पंजे से छुड़ाने वाले भी एक परमात्मा ही हैं जिन्हें कालों का काल महाकाल, महाकालेश्वर, अमरनाथ, प्राणनाथ कहा जाता है। काल से बचने के लिए मनुष्य मृत्युंजय का पाठ करते हैं अर्थात् परमात्मा शिव की शरण में जाने की कामना करते हैं। परमात्मा की रक्षा मिलने से ही मनुष्य यमदूतों से बच सकते हैं और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा की महिमा में कहा जाता है-जाखो राखे साइयां, मार सके न कोय। बाल न बांका कर सके, चाहे सब जग बैरी होय।

बहनें रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं?

अब प्रश्न उठता है कि यदि परमात्मा ही पांचों प्रकार की रक्षा करते हैं तो बहनें, भाइयों को रक्षाबंधन क्यों बांधती हैं अथवा ब्राह्मण भी रक्षाबंधन क्यों बांधते हैं? इस बात को समझने के लिए, आपको यह जानना चाहिए कि इस पर्व को 'विष तोड़क पर्व' अथवा 'पुण्य प्रदायक पर्व' भी कहा जाता है। इन नामों से सिद्ध है कि यह बंधन विषय-विकारों को छोड़ने और पुण्यात्मा बनने के लिए है। अतः 'रक्षाबंधन' पवित्रता अथवा धर्म की रक्षा करने का बंधन है। बहन और भाई का संबंध बहुत पवित्र होता है। अतः बहनों का भाइयों को बंधन बांधने का अर्थ भी यही होता है कि भाई यह व्रत लें कि वे पवित्रता को धारण करेंगे तथा अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति को पवित्र बनाएंगे। मन, वचन और कर्म से पवित्र रहकर सभी नारियों से अपनी बहन के समान बर्ताव करेंगे। ब्राह्मणों द्वारा रक्षाबंधन बंधवाने का अर्थ भी यही है। प्राचीन काल में सच्चे ब्राह्मण पवित्र रहकर दूसरों को पवित्र रहने की प्रेरणा (शिक्षा) देते थे। अतः इस दिन वह बंधन बांधते हैं, ताकि प्रत्येक मनुष्य पवित्रता का व्रत ले। परन्तु आज न तो बहनें ही इस मनसा से रक्षाबंधन बांधती हैं और न ब्राह्मण ही। आज मनुष्य इस आध्यात्मिक रहस्य को भूल गया है और वह इस महान पर्व को एक रीति-रिवाज की तरह ही मानता है। इसलिए आज यह पर्व 'विष तोड़क' अथवा 'पुण्य प्रदायक' पर्व के रूप में नहीं रहा और व्यक्ति अथवा समाज को इससे वह प्राप्ति नहीं होती जो इसे यथार्थ रूप में मनाने से हो सकती है।

रक्षाबंधन का बंधन निभाने से मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति

रक्षाबंधन बहुत ही रहस्ययुक्त पर्व है। यदि ज्ञान-युक्त रीति से इस बंधन को निभाया जाए तो मनुष्य को मुक्ति और जीवनमुक्ति की प्राप्ति हो सकती है। इसका भाव यही है कि सृष्टि की आदि (अर्थात् स्थापना काल) में परमपिता परमात्मा शिव और प्रजापिता ब्रह्मा के निर्देश से सच्चे ब्राह्मणों ने तथा शिव-शक्ति रूपा बहनों ने मनुष्यों को यह बंधन बांधा था कि वे पवित्र बनें अर्थात् काम, क्रोधादि पर विजय प्राप्त करें।

कैसी होगी आने वाली स्वर्णिम दुनिया

आने वाली नई सतयुगी स्वर्णिम दुनिया धन-धान्य से भरपूर, हीरे-जवाहरात के महल होंगे। वहां 12 महीने मौसम सदाबहार रहता है। प्रकृति के पांचों तत्व संतुलित और सुखदायी होते हैं। हमारे संकल्पों के आधार पर प्रकृति चलती है। उस दुनिया में प्रत्येक देवी-देवता सदा सर्व गुणों, सर्व शक्तियों और सर्व कलाओं से भरपूर और संपन्न होते हैं। परम वैभव से संपन्न वह दुनिया इतनी सुंदर, सुखमय, आनंदमय होगी जिसकी मात्र कल्पना ही की जा सकती है। वहां संकल्प शक्ति के आधार पर दुनिया चलती है। जहां दूध-घी की नदियां बहती हैं, गाय और शेर एक घाट पानी पीते हैं।

परमात्मा के महावाक्य-

मैं सृष्टि पर सतयुगी शिवालय बनाने के लिए अवतरित हुआ हूं

परमात्मा पांच तरह से करते हैं हमारी रक्षा, मनुष्यों को छुड़ाते हैं माया के बंधनों से...

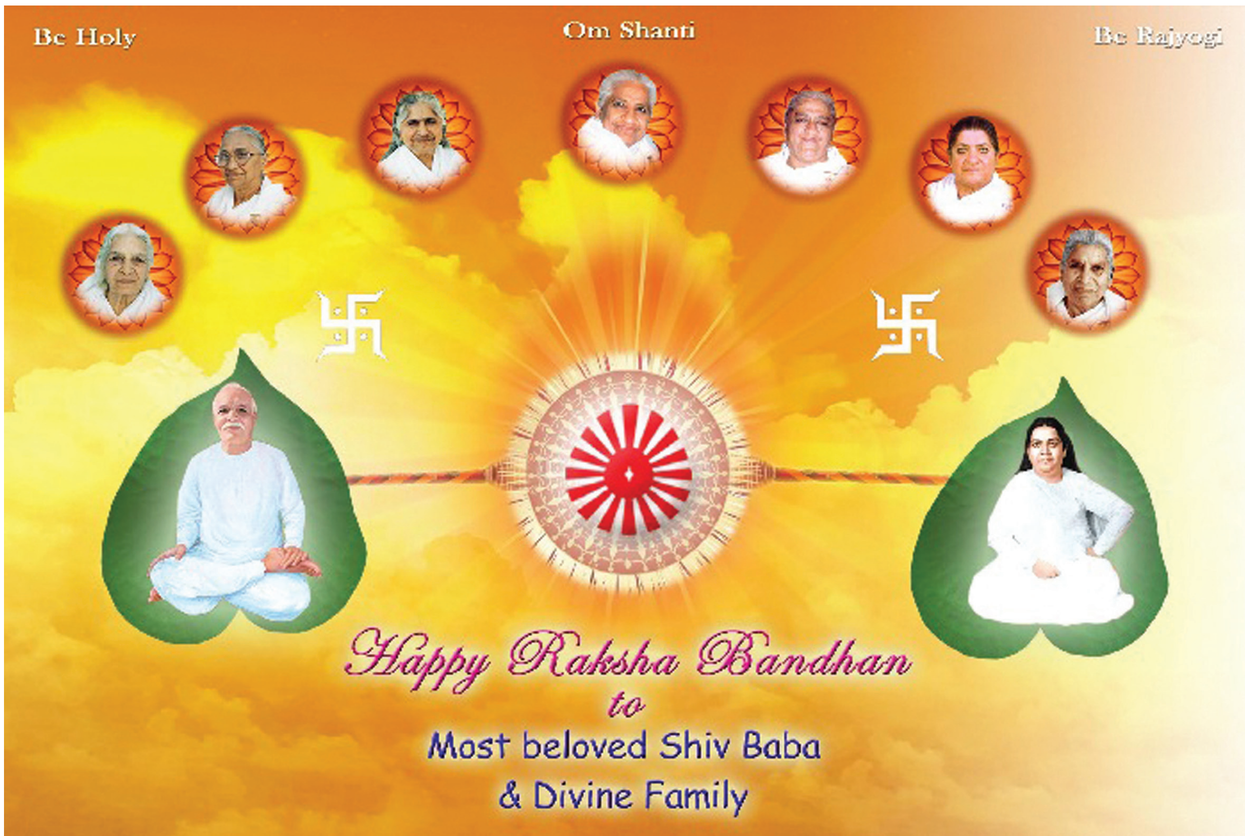

शिव आमंत्रण, आबूरोड।

संकट की वेला में द्रौपदी की पुकार सुनकर भगवान उसका चीर बढ़ाते हैं। शास्त्रों में तो एक द्रौपदी और एक दुर्योधन का वर्णन किया गया है। लेकिन वर्तमान स्थिति में देखा जाए तो यह चरित्र-चित्रण सारे समाज की दुर्दशा का है। जब व्यभिचार की अति हो जाती है और पाप का घड़ा भर जाता है तो कलियुग के अन्त और सतयुग की आदि के संगमयुग की वेला में गीता के भगवान शिव स्वयं अवतरित होकर यह महावाक्य उच्चारते हैं कि 'हे आत्माओं! काम महाशत्रु है। यही सबसे बड़ी हिंसा है जो आदि-मध्य-अन्त दुःख देने वाली है। इसी के द्वारा यह सृष्टि पतित बन गई है, जहां घर-घर में काम कटारी चलती है। काम- विकार नर्क का द्वार है। तुमने ही मुझ पतित पावन परमात्मा को पुकारा है, अब मैं इस कलियुग को सतयुगी शिवालय बनाने के लिए अवतरित हुआ हूं। अब इस कलियुगी पुरानी दुनिया का विनाश और सतयुगी नई दुनिया की पुनर्स्थापना होनी है। उस सतयुगी देवलोक में सम्पूर्ण निर्विकार आत्माएं ही जन्म ले सकेंगी।

पवित्रता ही सुख और शान्ति की जननी है। यदि तुम पवित्र बनोगे तो नूतन विश्व के मालिक बनोगे, वरना विनाश को प्राप्त हो जाओगे। अतः अब मैं तुम्हें आदेश देता हूं कि सारे कल्प के अपने इस अन्तिम जन्म में ब्रह्मचर्य व्रत को धारण करो और पवित्र बनो। जो मनुष्य परमपिता परमात्मा शिव की इस कल्याणकारी आज्ञा को मानकर पवित्रता के बंधन में बंधने को सहर्ष तैयार हो जाते हैं उन्हीं की मन-वचन-कर्म से, काम विकार से रक्षा के लिए परमात्मा शिव उन्हें रक्षाबंधन के पवित्र सूत्र में बंधवाते हैं जो उनके आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के पालन करने की प्रतिज्ञा का प्रतीक है। इस प्रकार इस पावन पर्व का प्रारम्भ स्वयं परमात्मा द्वारा पुरुषोत्तम संगमयुग पर होता है। वर्तमान में यह वही समय चल रहा है।

पवित्रता की राखी

सन्यासियों ने तो नारी को नर्क का द्वार कहकर अपवित्रता का सारा दोष नारी पर ही लगा दिया है। परन्तु वास्तव में नर और नारी दोनों ही पतित और विकारी बनते हैं। प्रायः नारियों की भेंट में नर ही अधिक कामी होते हैं। द्रौपदी की तरह कोई पुरुष अपनी लाज की रक्षा के लिए परमात्मा को नहीं पुकारते हैं। काम विकार के लिए प्रस्ताव भी प्रायः पुरुष ही करते हैं। कलियुग के अन्त के समय का पतित समाज भी पुरुष प्रधान होता है। अतः जैसा पहले स्पष्ट किया जा चुका है कि भाइयों के पवित्र बनने से ही बहनों की लाज बच सकती है। अतः परमपिता शिव परमात्मा पुरुषों को ही रक्षाबंधन बंधवा कर उनसे ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाते हैं। इसीलिए भाइयों को बहनों द्वारा राखी बांधने की प्रथा चली आती है।

जो मनुष्यात्माएं पवित्रता का बंधन बांधेंगे वे पुन: देवपद प्राप्त करेंगी

पुराणों में रक्षाबंधन को लेकर यही उल्लेख है कि जब असुरों से हार कर इन्द्र ने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था तो उन्होंने इन्द्राणि से यह रक्षाबंधन बंधवाया था और इसके फलस्वरूप अपना खोया हुआ स्वराज्य पुनः प्राप्त कर लिया था। इसी प्रकार दूसरे आख्यान में यह वर्णन मिलता है कि यम ने भी अपनी बहन यमुना से रक्षाबंधन बंधवाया था और उन्होंने कहा था इस बंधन को बांधने वाले मनुष्य यमदूतों से छूट जाएंगे। यहां प्रश्न उठता है कि इस त्योहार से इतनी बड़ी प्राप्ति, कैसे होती है? यह त्योहार विष तोड़क पर्व, पुण्य प्रदायक पर्व आदि नामों से भी प्रसिद्ध है। यह त्योहार पवित्रता की रक्षा करने, पुण्य करने और विषय-विकारों की आदत को तोड़ने की प्रेरणा देता है।

अतः यदि हम ऐसा बंधन बांधे तो निश्चय ही उपर्युक्त प्राप्ति हो सकती है। वास्तव में उपर्युक्त सभी बातों का आध्यात्मिक अर्थ है। यह अर्थ सारे कल्प की कहानी जानने से समझ में आता है। सतयुग और त्रेता में तो सभी मनुष्यात्माएं पूर्ण पवित्र (निर्विकारी) थीं, इसलिए उन्हें स्वर्ग का सुख और स्वराज्य प्राप्त था और श्रेष्ठाचार के कारण वे देवी-देवता कहलाती थीं। द्वापरयुग से लेकर वही देवी-देवता वाम मार्ग में चले गए अर्थात् विकारों के वश हो गए और इन काम-क्रोधादि विकारों से हारकर उन्होंने अपना राज्य-भाग्य गंवा दिया था। अब संगम समय फिर से परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के मुख द्वारा सहज ज्ञान और राजयोग की शिक्षा देकर पतितों को पावन अथवा शूद्र से सच्चे ब्राह्मण बना रहे हैं। अतः जो मनुष्यात्माएं पवित्रता का बंधन बांधेंगे वे पुनः देवपद प्राप्त करेंगी अर्थात् अपना खोया हुआ स्वराज्य राज्य-भाग्य प्राप्त करेंगी और यम के दंड से भी छूट जाएंगी और मुक्ति भी प्राप्त करेंगी।

हम सभी परमात्मा की संतान हैं

गोपीवल्लभ परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा सच्चा 'रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ' रचकर ईश्वरीय ज्ञान व योग और पवित्रता के बल से सर्वप्रथम अबला नारियों को सबला अथवा शिव-शक्तियां बनाते हैं। भारत में दुर्गा, अम्बा, काली, शीतला इत्यादि शिव शक्तियों का गायन-पूजन आज तक होता है। वास्तव में इन्हीं शिव शक्तियों अथवा चेतन ज्ञान-गंगाओं द्वारा मनुष्यों को रक्षाबंधन बांध कर ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा करवाने का पावन कर्त्तव्य चलता है। ब्राह्मणों द्वारा अपने यजमानों को राखी बांधने की प्रथा भी प्रचलित है। पुराने समय में ब्राह्मण ब्रह्मचर्य सहित सभी नियमों का पालन करते थे इसलिए वह इसके योग्य थे। लेकिन वर्तमान में कुख वंशावली ब्राह्मण न तो रक्षाबंधन के महत्त्व को जानते हैं और न ही इनमें वह ईश्वरीय ज्ञान-योग बल है जिससे वह स्वयं और दूसरों को पवित्रता की धारणा करवा सकें। ब्रह्मा मुख वंशावली शिव-शक्तियां ही वह सच्ची बालब्रह्मचारिणी ब्राह्मणियां (ब्रह्माकुमारियां) हैं जो स्वयं पवित्रता के व्रत को धारण करके अन्य मनुष्यों को भी इस कल्याणकारी बंधन में बांधने की अलौकिक सेवा करती हैं। पावन बनने के लिए वे पुरुषों को यह अनोखी युक्ति बताती हैं कि सभी मनुष्य-आत्माएं एक ही पिता परमात्मा की सन्तान होने के नाते से भाई-बहन ही हैं। इसी सम्बन्ध में स्थित होकर चलेंगे तो काम विकार का प्रश्न ही नहीं उठेगा। लौकक बहन द्वारा भाई को राखी बांधने की रस्म, इसी महत्त्वपूर्ण रहस्य का रूप है।

यह त्योहार कब और कैसे शुरू हुआ?

ऊपर जो कल्प की कहानी बताई गई है, उससे इस प्रश्न का समाधान मिल जाता है। प्रजापिता ब्रह्मा के कमल मुख द्वारा जिन नर-नारियों ने वास्तविक ज्ञान और योग की शिक्षा प्राप्त करके विकारों रूपी विष को तोड़ा था और स्वयं को पुण्यात्मा बनाया था, उन सच्चे ब्राह्मणों अथवा सच्चे ब्रह्माकुमारों और ब्रह्माकुमारियों ने जन-जन को पवित्रता का प्रतीक यह रक्षाबंधन बांधा। जिन्होंने ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग सीखकर उस बंधन को निभाया, उन्होंने मुक्ति और जीवनमुक्ति प्राप्त की। अतः इस बंधन को आज तक भी मनाया जाता है और आज ब्राह्मण और बहनें यह बंधन बांधते हैं।

इस राखी एक संकल्प पौधा लगाने का...

आइए, इस रक्षाबंधन पर हम एक पौधा लगाने का संकल्प लेते हैं। रक्षाबंधन पर पर्यावरण और पेड़-पौधों की रक्षा का संकल्प लेते हैं। धरती मां के लिए इससे बड़ी सौगात और कुछ नहीं हो सकती है। यदि पर्यावरण बचेगा, प्रकृति बचेगी तो हमारा भविष्य सुखद और आनंदमय रहेगा। अब वक्त आ गया है कि प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण की रक्षा के लिए आगे आना होगा।

स्व परिवर्तन से होगा विश्व परिवर्तन

ब्रह्माकुमारी संस्थान पिछले 87 वर्षों से समाज के सभी वर्गों के उत्थान, सशक्तिकरण और विकास के लिए समर्पित रूप से कार्य कर रही है। संस्थान का मूल नारा है- स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन और समाज में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना। आध्यात्म ही वह शक्ति है जिसके बल से हम विश्व में शांति, सद्भाव और एकता लाकर वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को साकार कर सकते हैं। संस्थान योग-साधना के साथ विश्व के 140 देशों में सामाजिक सरोकार के कार्यों में अपनी महत्वपूर्ण भागीदारी निभा रहा है। समाज के अंतिम छोर के व्यक्ति तक लाभ पहुंचाने के लिए देशभर में नशामुक्त भारत अभियान, मेरा भारत स्वस्थ भारत, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर किसान अभियान, यौगिक खेती अभियान, यौगिक गृह वाटिका अभियान, पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, जेल सुधार, स्वच्छ भारत मिशन आदि अभियान चलाए जा रहे हैं। नारी तू कल्याणी के पवित्र संकल्प के साथ समाज में बेटियों का मान बढ़ाने के लिए समय प्रति समय राष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस, सभा, सम्मेलन और सेमीनार आयोजित किए जाते हैं। रक्तदान, पर्यावरण संरक्षण, जैविक-यौगिक खेती, नशा मुक्ति आदि जन सरोकार से जुड़े मुददें पर देशभर में कॉन्फ्रेंस आयोजित कर लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

बदलाव की गाथा लिख रहीं बालब्रह्मचारिणी ब्रह्माकुमारियां

- नारी शक्ति के नेतृत्व में संचालित दुनिया का सबसे बड़ा संगठन है ब्रह्माकुमारीज़
- ब्रह्मा बाबा का संकल्प हो रहा साकार, नारी को शक्ति बनाने की सोच ले रही आकार
- भारतीय पुरातन संस्कृति अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा विश्वभर में गूंज रही

स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के नारे के साथ संचालित है संस्थान

आबू रोड। ब्रह्माकुमारीज़ नारी शक्ति का विश्व का सबसे बड़ा और विशाल संगठन है। विश्व शांति के महान ध्येय के साथ 50 हजार बालब्रह्मचारिणी ब्रह्माकुमारियां बदलाव की गाथा लिख रही हैं। श्वेतवस्त्रधारिणी, ये शक्ति स्वरूपा बहनें तन-मन-धन से विश्व बदलाव के कार्य में पूरी तन्मयता, समर्पण भाव, एकजुटता के साथ सेवा में समर्पित हैं। संस्थापक ब्रह्मा बाबा की त्याग-तपस्या का परिणाम है कि खुद पीछे रहकर नारी शक्ति को आगे बढ़ाया जो आज पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति अध्यात्म का परचम फहरा रही हैं।

बाबा ने अपनी जमीन-जायजाद बेचकर बनाया था ट्रस्ट-

नारी नरक का द्वार नहीं सिर का ताज है, नारी अबला नहीं सबला है, वह तो शक्ति स्वरूपा है। बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और नारी के उत्थान के संकल्प के साथ उसे समाज में खोया सम्मान दिलाने, भारत माता, वंदे मातरम् की गाथा को सही अर्थों में चरितार्थ करने वर्ष 1937 में उस जमाने के हीरे-जवाहरात के प्रसिद्ध व्यापारी दादा लेखराज कृपलानी ने परिवर्तन की नींव रखी। नारी उत्थान को लेकर उनका दृढ़ संकल्प ही था कि उन्होंने अपनी सारी जमीन-जायजाद बेचकर एक ट्रस्ट बनाया और उसमें संचालन की जिम्मेदारी नारियों को सौंप दी। इतने बड़े त्याग के बाद भी खुद को कभी आगे नहीं रखा। लोगों में परिवारवाद का संदेश न जाए इसलिए बेटी तक को संचालन समिति में नहीं रखा। हम बात कर रहे हैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के संस्थापक दादा लेखराज कृपलानी जिन्हें सभी प्यार से ब्रह्मा बाबा कहते हैं। 18 जनवरी 1969 को 93 वर्ष की आयु में संपूर्णता की स्थिति प्राप्त कर बाबा अव्यक्त हो गए थे। लेकिन उन्होंने अपने जीवन में जो मिसाल पेश की उसे आज भी लाखों लोग अनुसरण करते हुए राजयोग के पथ पर आगे बढ़ते जा रहे हैं। संस्थान की मुख्य शिक्षा और नारा है- स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन और नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना करना।

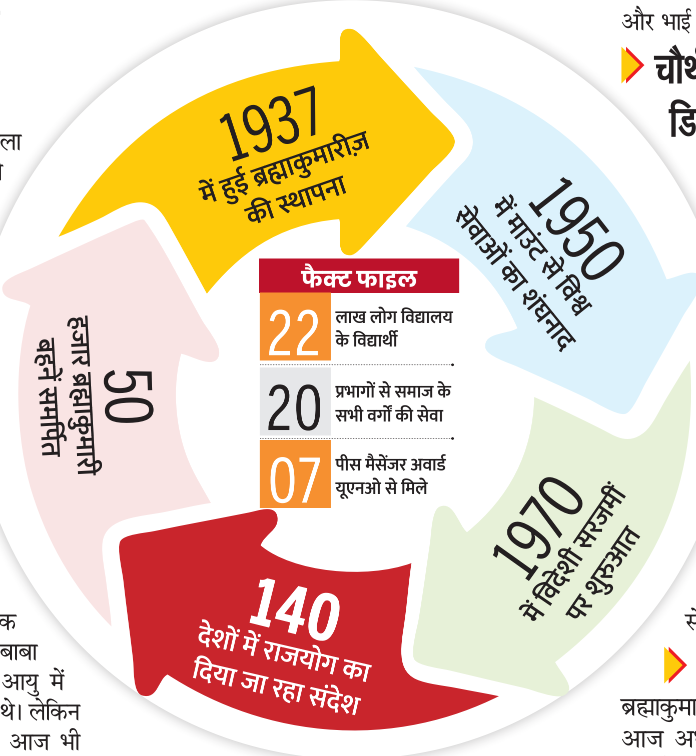

1950 में माउंट आबू से शुरुआत-

15 दिसंबर 1876 में जन्मे दादा लेखराज (ब्रह्मा बाबा) बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि और ईमानदार थे। उन्हें परमात्म मिलन की इतनी लगन थी कि अपने जीवन काल में 12 गुरु बनाए थे। वह कहते थे कि गुरु का बुलावा मतलब काल का बुलावा। 60 वर्ष की आयु में वर्ष 1936 में आपको दुनिया के महाविनाश और नई सृष्टि का साक्षात्कार हुआ। इसके बाद आपने परमात्मा के निर्देशन अनुसार अपनी सारी चल-अचल संपत्ति को बेचकर माताओं-बहनों के नाम एक ट्रस्ट बनाया, उस समय संस्थान का नाम ओम मंडली था। वर्ष 1950 में संस्थान के माउंट आबू स्थानांतरण के बाद इसका नाम प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय पड़ा। इसकी प्रथम मुख्य प्रशासिका मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती को नियुक्त किया गया। दादा लेखराज की एक बेटी और दो बेटे थे। ब्रह्मा बाबा ने माताओं-बहनों को जिम्मेदारी सौंपकर खुद कभी पैसों को हाथ नहीं लगाया। यहां तक कि उनमें इतना निर्माण भाव था कि खुद के लिए भी कभी पैसे की जरूरत पड़ती तो बहनों से मांगते थे। बाबा कहते थे कि नारी ही एक दिन दुनिया के उद्धार और सृष्टि परिवर्तन के कार्य में अग्रणी भूमिका निभाएगी।

दुनिया का सबसे बड़ा संगठन-

ब्रह्माकुमारी संस्थान नारी शक्ति द्वारा संचालित दुनिया का सबसे बड़ा और एकमात्र संगठन है। यहां मुख्य प्रशासिका से लेकर प्रमुख पदों पर महिलाएं ही हैं। नारी सशक्तिकरण का इससे बड़ा उदाहरण और क्या हो सकता है कि यहां के भोजनालय में भाई भोजन बनाते हैं और बहनें बैठकर भोजन करती हैं। संगठन की सारी जिम्मेदारियों को बहनें संभालती हैं और भाई उनके सहयोगी के रूप में साथ निभाते हैं।

चौथी पास से लेकर पीएचडी डिग्रीधारी बहनें समर्पित-

राजयोग ध्यान का ही कमाल है कि संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका स्व. राजयोगिनी दादी जानकी जो मात्र चौथी कक्षा तक पढ़ीं थी लेकिन 60 वर्ष की उम्र में वह विदेशी सरजमीं पर पहुंचीं। 90 साल की उम्र तक उन्होंने अकेले 100 से अधिक देशों में भारतीय अध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का परचम लहराया। इसके अलावा अनेकों ऐसी बहनें हैं जो आठवीं कक्षा से कम पढ़ी-लिखीं हैं लेकिन जब वह मंच से शक्ति स्वरूपा बनकर दहाड़ती हैं तो लोग दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं। संस्थान में डॉक्टर, इंजीनियर, साइंटिस्ट, वकील, प्रोफेसर, जज से लेकर सिंगर बहनें हैं जिन्होंने बाकायदा प्रोफेशनल डिग्री लेने के बाद अध्यात्म की राह अपनाई और समर्पित रूप से सेवाएं दे रही हैं।

140 देशों में पांच हजार सेवाकेंद्र-

ब्रह्माकुमारियों के त्याग और तपस्या का परिणाम है कि आज अध्यात्म की गूंज सारे विश्व में सुनाई दे रही है। हर कोई ध्यान की पद्धति सीखने, समझने और आत्मसात करने के लिए लालायित है। क्योंकि मानसिक व्याधियों के लिए राजयोग ध्यान के अलावा दूसरा कोई चारा नहीं है। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन का एक विचार आज क्रांति बनकर गूंज रहा है। संस्थान के विश्व के 140 देशों में पांच हजार से अधिक सेवाकेंद्र संचालित हैं। 50 हजार ब्रह्माकुमारी बहनें समर्पित रूप से तन-मन-धन के साथ अपनी सेवाएं दे रही हैं। 22 लाख से अधिक लोग इसके नियमित विद्यार्थी हैं जो नियमित सत्संग मुरली क्लास करते हैं। दो लाख से अधिक ऐसे युवा जुड़े हुए हैं जो बालब्रह्मचारी रहकर सेवा कर रहे हैं। समाज के सभी वर्गों तक राजयोग का संदेश देने के लिए राजयोग एजुकेशन एंड रिसर्च फाउंडेशन के तहत 20 प्रभागों की स्थापना की है। आत्मा का परमात्मा महामिलन कराने में ब्रह्माकुमारियां शांतिदूत बनकर जन-जन को जगा रही हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव आज मूर्तरूप ले रहा है...

भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के बाद परमात्मा के निर्देशानुसार 1950 में ओम मंडली का स्थानांतरण राजस्थान के एकमात्र हिल स्टेशन माउण्ट आबू किया गया। उस वक्त केवल 350 भाई-बहनें ही इस संगठन के सारथी थे। माउंट आबू की पावन धरा से पवित्र, राजयोगी ब्रह्माकुमार भाई-बहनें भारतीय आध्यात्म और राजयोग मेडिटेशन का दिव्य संदेश लेकर देशभर में निकले। 'स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन' का यह महान संकल्प देखते ही देखते लोगों ने अंतर्मन से आत्मसात किया। इस नए और अनोखे ज्ञान को लोगों ने दिल से स्वीकारा, अपनाया और परमात्म राह पर चल पड़े। विश्व के 140 मुल्कों में परमात्मा का संदेश दिया जा रहा है।

स्थानीय सेवाकेंद्र का पता-

पत्र-व्यवहार का पता-

संपादक ब्र.कु. कोमल, ब्रह्माकुमारीज़, शिव आमंत्रण ऑफिस, शांतिवन, आबू रोड, सिरोही, राजस्थान, पिन कोड- 307510
मो. 9414172596, 6377090960

• प्रकाशक व मुद्रक : करुणाकर शेट्टी द्वारा डीबी कार्प लिमिटेड भास्कार प्रिंटिंग प्रेस, शिवदासपुरा, टोंक रोड, जयपुर से मुद्रित एवं शिव आमंत्रण, ब्रह्माकुमारीज़ शांतिवन, आबू रोड, राजस्थान से प्रकाशित • संपादक ब्र.कु. कोमल
• संयुक्त संपादकः ब्र.कु. पुष्पेन्द्र • RNI No.: RAJHIN/2013/53539